

गोह का विशाल बिल

कालू राम शर्मा



दुनियाभर में छिपकलियों की उलगभग 5800 प्रजातियाँ हैं जो अंटार्कटिका को छोड़कर लगभग हर महाद्वीप में पाई जाती हैं। छिपकलियों की कई प्रजातियाँ अपने अण्डों की सुरक्षा करने, अपने शरीर के तापमान को बरकरार रखने और शिकारियों

से बचने के लिए ज़मीन में बिल बनाती हैं। कुछ छिपकलियाँ जैसे गिरगिट (कैमीलियन) झाड़ियों व पेड़ों पर रहती हैं लेकिन अण्डे देने के

लिए ज़मीन में बिल बनाती हैं। बिल बनाने वाली सभी छिपकलियाँ खुद ही अपना बिल खोदती हैं। बिल खोदने के लिए इनके पास मज़बूत पंजे होते हैं। बिल में घुसने के लिए कुछ प्रजातियों की छिपकलियों का सिर तिकोना-सा होता है।

गोह भी एक प्रकार की छिपकली है। गोह कहाँ रहती है – इस मामूली-से समझे जाने वाले सवाल पर एक वैज्ञानिक ने विस्तृत अध्ययन किया।

उसने यह भी जानने की कोशिश की कि गोह बिल कैसे और किस जगह पर बनाती है। गोह का बिल अन्दर से कैसा होता होगा? क्या गोह अकेली रहती है या समूह में? क्या इसके आसपास अन्य जीव भी मिलते हैं? अध्ययन के दौरान उन्होंने गोह के बिल को लेकर और भी बहुत कुछ जाना।

खासकर, पहली बरसात के दौरान जब मौसम में ठण्डक घुलना शुरू होती है तो गोह दिखने लगती है। गोह कहाँ रहती होगी – इस सवाल ने मुझे भी काफी सोचने व पढ़ने के लिए प्रेरित किया। स्थानीय लोग बताते हैं कि गोह किसी वीरान पेड़ की खोह या ज़मीन में बिल बनाकर

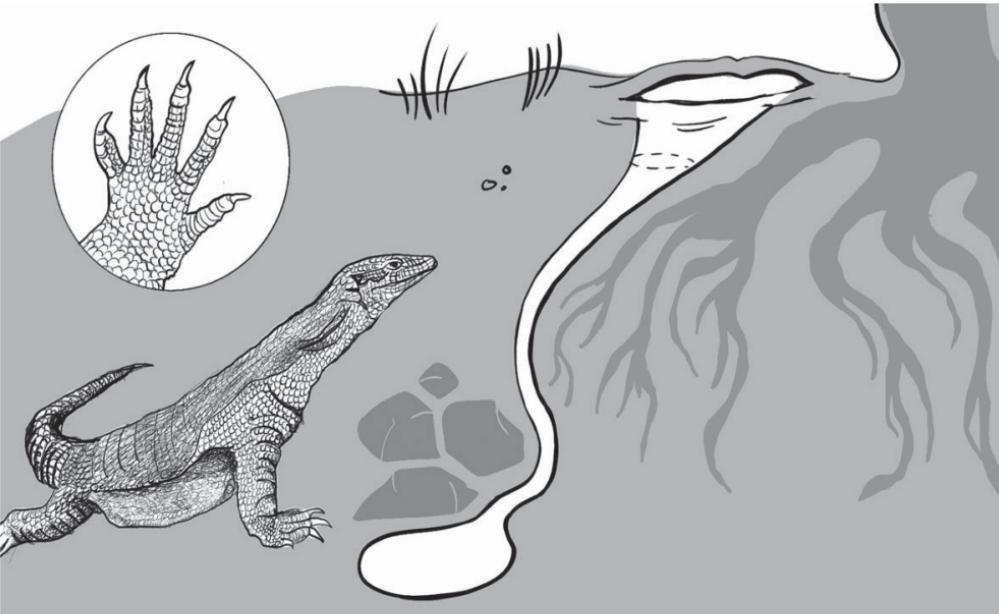


चित्र-1: जीभ लपलपाती हुई गोह (मॉनिटर लिझर्ड)। फोटो - सीअन डूडी।

रहती है। मैंने भी इसे पुराने पेड़ की खोह में ही देखा है। नर गोह दिन में बिल से अधिक दूरी तक भटकते पाए गए जबकि मादा कम दूरी तक जाती हैं। जहाँ गोह रहती है, लोग वहाँ जाने से काफी डरते हैं क्योंकि अक्सर माना जाता है कि गोह खतरनाक होती है। खतरनाकपन की यह मान्यता एक तो इसके विचित्र आकार और ऊपर से जीभ को लपलपाने के कारण पनपी है। दरअसल, गोह विषेली नहीं होती।

गोह का बिल: संरचना व निर्माण

बात को आगे बढ़ाने से पहले यह बताता चलूँ कि कुछ लोगों ने गोह को बिल में अकेले आराम करते देखा है। एक वैज्ञानिक ने यमुना नदी धाटी क्षेत्र में गोह के बिलों का बारीकी-से अध्ययन किया। अवलोकन में पाया गया कि गोह खुद से बिल खोदने में सक्षम होती है और अक्सर बिल बनाने के कार्य में जुटी रहती है। गोह जो बिल बनाती है, वह पहले से ही चूहों या अन्य जानवरों के बिल हो सकते हैं जिसे खोदकर गोह अपने लायक बना लेती है। जब गोह पूरी तरह से खुद ही बिल



चित्र-2: गोह अपनी बिल खोदने की क्षमता के लिए जानी जाती है, हालाँकि इन बिलों की संरचना और उपयोग प्रजाति तथा पर्यावरण के अनुसार मिन्ह हो सकते हैं। इनकी विशाल बिल प्रणाली सैकड़ों छोटे जानवरों को भी आश्रय देती है। कुछ जानवर इन बिलों का उपयोग सर्वियों में शीतलनद्रा के लिए करते हैं तो कुछ इन्हें शरण-स्थल के रूप में इस्तेमाल करते हैं, जब उन्हें गर्म और शुष्क ग्रीष्म ऋतु में निष्क्रिय होना पड़ता है। कुछ शायद शिकारियों से छिप रहे होते हैं और कुछ तो अपने अण्डे तक इन बिलों में दे देते हैं। **चित्र:** उर्वा सावंत।

बनाती है तो वह मिट्टी के टीले या ढलानदार जगहों को चुनती है। यह भी देखा गया है कि वह बड़े-बड़े पत्थरों के बीच भी बिल बनाती है।

इनका बिल बेलनाकार यानी नलीनुमा होता है जो आड़े रूप में अण्डाकार होता है। बिल का सबसे आगे वाला हिस्सा आम तौर पर ऊपर से उठा हुआ होता है जबकि बिल के अन्दर का पैंदा बैठा हुआ होता है। बिल का मुँह अन्दर की सुरंग की अपेक्षा चौड़ा होता है। बिल बाहर से अन्दर की ओर धीरे-धीरे संकरा होता जाता है और आखरी में फिर से थोड़ा

चौड़ापन लिए होता है।

सबसे पहले गोह ज़मीन पर अपने अगले पंजों से खुदाई करती है और बारी-बारी से मिट्टी को हटाती जाती है। यदि बिल पुराना हो तो सबसे पहले उसकी सफाई करती है और फिर धीरे-धीरे खुदाई करते हुए, अन्दर धुसती जाती है और खोदी गई मिट्टी को बाहर फेंकती जाती है। अगर बिल के अन्दर किसी पेड़ की जड़ या पत्थर आ जाए तो उसे हटा पाने में गोह सक्षम नहीं होती। ऐसे में वह बिल का रास्ता बदल देती है। गोह का बिल किसी मिट्टी के खड़े

टीले में ज़मीन के समानान्तर भी हो सकता है। या फिर ज़मीन के अन्दर लम्बवत यानी खड़ा भी हो सकता है। हालाँकि, ज़मीन के अन्दर बिल एकदम खड़ा नहीं होता, थोड़ा तिरछा ही होता है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि अधिकांश गोह दीमक के पुराने बिलों की खुदाई करके, उन्हें अपने रहने लायक बना लेती हैं। दीमक के पुराने बिलों को गोह शायद इसलिए पसन्द करती हैं क्योंकि उसमें अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ती। दीमक के टीले की मिट्टी काफी भुरभुरी होती है जिसे खोद पाना आसान होता है। यह भी देखा गया है कि आम तौर पर गोह जुलाई-अगस्त के महीने में दीमक के बिलों की खुदाई करती है। एक और बात देखने में आई कि गोह

अपने ही पुराने बिलों को भी बार-बार इस्तेमाल कर लेती है।

स्थानीय सपेरों ने बताया कि कभी-कभार एक ही दीमक के टीले में एक से अधिक गोह को बिल बनाते भी देखा गया है। बिलों के अवलोकन के दौरान उसी बिल में एक बार नाग व बैंडेड कुकरी साँप भी दिखाई दिए थे।

गोह दिनचर होती हैं। वे दिन में बिल के बाहर रहती हैं और अपने शिकार की खोज में भटकती रहती हैं। वे अक्सर सुबह-सुबह बिल छोड़ देती हैं और शाम को लौटती हैं व रात बिल में गुज़ारती हैं। जब ठण्ड अधिक होती है तो ये दिन में भी बिल में दुबकी रहती हैं। ठण्ड के दिनों में जब सूरज चमक रहा होता है तभी ये बाहर निकलती हैं और धूप सेंकती हैं।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर नियन्त्र लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। इकलव्य के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाइ।

यह उनकी अप्रकाशित रचना है।



फोटो:
विषुल
शर्मा